'रीतिकाम' के कवियों का परिचय

फाल्गुनिबहन नटवरलाल पटेल
सरकारी आदर्श निवासी शाला (कन्या), खेडब्रह्मा

हिन्दी साहित्य का उत्तर मध्यकाल रीतिकाल के नाम से पुकारा जाता हैं, इस समय के शासक साहित्य प्रेम, काव्य प्रेम तथा मनोरंजन के लिए कवियों का आश्रय देने लगे थे । रीतिकाल का समय सन १७०० ई के आसपास माना जाता है । उस समय कवियों का मुख्य ध्येय आश्रयदाताओं का मनोरंजन करना था । इस काल के कवियों में स्वतंत्र सुखी और पराहित का अभाव है । उस समय कवियों राम और कृष्ण की प्रेम लीलाओं की ओट में कविगण श्रृंगार वर्णन, ऋतु वर्णन नख शिख वर्णन आदि पर कविता लिखकर आचार्यत्व और पांडित्वपूर्ण की होड में लगे हुए थे । कवियो ने कलापक्ष में ही कुछ अधिक चमत्कार ओर नवीनता लाने का प्रयास किया । 'रीति' का अर्थ है "शैली" । उस समय कवियों ने काव्य शैली की इस विशिष्ट पध्धति का विकास किया इसलिए इस काल का रीतिकाल कहा जाता है । इस काल में अलंकार, रस, नाविका, भेद, नखशिख वर्णन छंद आदि काव्यांगो पर प्रचुर रचना हुई है ।

रीतिकाल का नामकरण

हिन्दी साहित्य में रीतिकाल सन १९४३ से १८४३ ई तक माना जाता है । इस काल तक हिन्दी काव्य अपनी प्रौढता तक जा चूका था ।

विभिन्न विद्वानोने रीतिकाल को अनेक नामों से पुकारा है । मिश्रबन्धुने उन्हे अलंकृत काल कहा है, आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्रने इसे श्रृंगार काल कहा है । यह नाम तत्कालीन सम्पूर्ण रचनाओं को समेट कर चलता है । इस नाम की व्यापकता, सार्थकता को आचार्य शुक्ल ने भी स्वीकार करते हुए लिखा है कि वास्तव में श्रृंगार और वीर दो रसो की कविता इस काल में हुई, प्रस्थानता श्रृंगार रस की रही । इससे इस काल को रस के विचार से कोई श्रृंगार काल कहना चाहे तो कोई गलत नहीं होगा । जब की डॉ. रसाल इसे कलाकाल कहते है । उनका कहना है की काव्य का कला पक्ष इस काल में जीतना फलाफूला उतना औतना काल में नहीं हुआ । परंतु आचार्य शुक्ल ने रीति ग्रंथो की बहुलता के आधार पर इसका नामकरण रीतिकाल रखा । रीति काल का वर्गीकरण देखे तो, रीतिकाल के काव्य की दो धाराएँ है । (१) रीतिबध्ध काव्य धारा (२) रीतिमुक्त काव्यधारा । जिन कवियों ने उपयुक्त लक्षण लक्ष्यवाली पध्धति अपनाई वे रीति परंपरा से बंधे होने के कारण रीति कहलाये और जिन्होंने इस पध्धति का तिरस्कार करके काव्य रचना की और सहज स्वाभाविक पध्धति अपनाई वे रीतियुक्त कहलाएँ है ।

रीतिकाल के कवियों में भी दो भेद है। रीतिबद्ध और रीतिसिध्ध। जो कविने लक्षण लक्ष्य ग्रन्थवाली पध्धति दोनों लिखे, किन्तु जिन्होंने विभिन्न काव्यांगो के लक्षण तो नहीं लिख पर अपनी काव्य रचना के समय इन लक्षणों का ध्यान अवश्य रखा, जिससे उनकी कविताओं इन विभिन्न लक्षणों का उदाहरण जैसी लगती है वे रीति सिध्धि कहलावे। रीतिसिध्धि कवियोंने रीति शैली को पृष्ठभूमि में रखा है। जब की रीति मुक्त धारा के कवियों ने रीति को महत्व न देकर पृथक प्रकृति को महत्व दिया।

रीतिकाल की प्रमुख्य विशेषताएँ

रीतिकाल की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित है। मुख्य काव्य रस श्रृंगार है और नायिका का नख शिख वर्णन और कटाक्ष वर्णन उनका लक्ष्य है। नारी को केवल भोग्या के रुप में दिखाया गया।

नायिका भेद उभरकर आया और वो अत्याधिक उत्तेजक और कामुक भी था। इस काल के कवियों को लक्षण ग्रन्थ लिख कर आचार्य का भी कार्य करना पडा। परंतु एक भी कार्य ठीक से न कर पाएँ। इस काल के कवियों को अलंकार प्रिय थे। वे मानते थे भूषण बिना न सोई, कविता वनिता मित ! इस दृष्टि से इन कवियों ने अपनी कविता कामिनी को अलंकार से खूब सजाया है। इस काल में भाषा कोमलता, मधुरता सर्वोपरि है। और मुसलमान कवियों ने ब्रज भाषा का उपयोग किया था। कवियोंने कला पक्ष को ज्यादा महत्व दिया। भक्तिकाल में समापत हो चूकी वीर रस को रीतिकाल में पुनःजागृत करवाया गया था।

रीतिकाल के कवि

रीतिकाल के ज्यादातर कवि दरबारी होने के कारण दोनों लक्षणों में लिखना पडा। इस युग में श्रृंगार की प्रधानता रही। मुख्यता कवित्व, सवैचे और दोहे इस युग में लिखे गए। कवि राजाश्रित होने के कारण उनकी कविताएँ चमत्कारपूर्ण व्यंजना की विशेष मात्रा मिलती है किन्तु सामान्य जनता से विमुख भी है। रीतिकाव्य रचना का प्रारंभ एक संस्कृतज्ञ ने किया। ये थे आचार्य केशवदास, जिनकी सर्वप्रसिध्ध रचनाएँ कविप्रिया, रसिकप्रिया और रामचंद्रिका है। कविप्रिया में अलंकार और रसिकप्रिया में रस का सोदाहरण निरुपण है। जबकी रामचंद्रिका केशव का प्रबंध काव्य है। रीतिकाल के कई कवि थे; जैसे की केशवदास (ओच्छा) प्रतापसिंह (परखारी) रघुनाथ (काशी) कुलपित मिश्र (जयपुर) तेवाज (पन्ना) सुरति मिश्र (दिल्ली) कवीन्द्र उदयनाथ (अमेठी) ये सब दरबारी थे। जबकी भगवन्त राय खीची, भूपति, रसनिधि, महाराज विश्वनाथ, महाराज मानसिंह, आदि राजा ही थे। चिन्तामणी त्रिपाठी हिन्दी के रीतिकाल के सबसे बडे कवि है। चिन्तामणी रीतिग्रंथाकार काय थे और कभी कभी अपनी रचनाओं में अपना नाम 'मनिलाल' और 'लालमनि' भी रखते थे। हिन्दी के ब्रजभाषा काव्य के अंतर्गत देव को महाकवि का गौरव प्राप्त है। उनका पूरा नाम देवदत्त था। उनका आविर्भाव रीतिकाल में हुआ।

रकीतिकाल में दीनदयालु गिरि, नन्दराम हो गए। उसके अलावा पद्माकर (१९६३-१८३३) ब्रजभाषा कवि थे। वो खूब ज्यादा प्रसिध्ध हुए थे। जबकी बोघा (१७६७-१८०६) रीतिकाल के

शृंगार रस के कवि थे । उन्होंने छंदो का उल्लेख उनके काव्य में कीया गया है । भिखारी दास रीतिकाल के श्रेष्ठ हिन्दी थे । भिखारीदास द्वारा लिखित सात कृतियाँ प्रामाणिक मानी गई है । भूषण (१६१३-१७१५) रीतिकाल के प्रमुख कवि थे । रीतिकाल में जब सब कवि श्रृंगार रस में रचना कर रहे थे, वीर रस में प्रमुखता से उन्होंने रचना की थी । रसिक गोविंद रीति ग्रंथकार कवि थे । वो वृंदावन में रहते थे । जबकी शिवराज भूषण अपना प्रधान ग्रंथ 'शिवराज भूषण' अलंकार के ग्रंथ के रुप में बनाया । शिवानन्द गोस्वामी त्रिपुर सुन्दरी के अनन्य साधक और शक्ति उपासक थे । उन्होंने सिंह सिध्धांत – सिंधु लिखने का श्रेय जाता है ।

रीतिकाल का निष्कर्ष देखे तो उस समय के प्रत्येक कवि आचार्य बनने की कोशिश करने लगा, जिसका परिणआम यह हुआ कि वे सफल आचार्य तो बन नही पाए, उनके कवित्व पर भी कहीं कहीं दाग लग गए । इन रीति ग्रंथकारो में मौलिकता का सर्वथा अभाव रहा । काव्य के सब अंगो का समान विवेचन नही किया । शब्द शक्ति की और किसी का ध्यान नही गया । रस में भी केवल श्रृंगार को ही प्रधानता दी गई । रीतिकाल में कविता में भावों की कोमलता, कल्पना की उडान और भाषा की मधुरता का सुंदर समन्वय हुआ है ।

संदर्भसूचि

1. शुक्ल, रामचंद्र (२०१०). हिन्दी साहित्य का इतिहास, नयी दिल्ली : प्रकाशन संस्थान ।
2. प्रसाद, शशिप्रभा (२००७). रीतिकालीन भारतीय समाज, इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन ।
3. नगेन्द्र, (२०००). रीतिकाव्य की भूमिका, नोएडा : मयूर पेपर बैक्स ।